Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण :- ऋग्वैदिक काल से गुप्त काल तक

राहुल कुमार
विभाग इतिहास
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय ,अमृतसर

Article Info
Volume 5, Issue 2

Page Number : 01-04

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Received : 01 March 2022
Published : 05 March 2022

जब से इस सृष्टि पर मानव सभ्यता का आरम्भ हुआ तब से ही स्त्रियों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भुमिका है | सिन्धु सभ्यता के अवशेषों से हमें नृत्य करती स्त्री की मूर्ति प्राप्त हुई | इस मूर्ति को देख कर यह प्रतीत होता है कि उस समय से ही स्त्रियों को समाज ने नाच गान की अनुमति दे रखी थी | प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को पुरूषों के बराबर सम्मान दिया गया | प्राचीन भारतीय इतिहास में स्त्रियों को पुरूषों के समान समाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्र में बराबर का अधिकार मिला | वैदिक काल के समाज में स्त्री तथा पुरुष को एक समान माना क्योंकि दोनों ही एक दुसरे की पारिवारिक और सामाजिक जरूरतों को पुरा करते थे | ऋग्वैदिक काल में पुत्री को दुहित्ति नाम से सम्बोधित किया जाता था क्योंकि पुत्री गाय का दुध निकलने का कार्य करती थी , इस साक्ष्य से पता चलता है कि वैदिक समाज में पुत्री को विशेष स्थान दिया गया |1 जैसे जैसे समय का पहिया घुमता गया हमें उतरवैदिक समाज में ऐसी स्त्रियों को वर्णन मिला जो जीवन भर अविवाहित रहीं तथा उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में युद्धो, शास्त्रार्थो में भाग लिया | ऐसी ही एक स्त्री थी जिसका नाम गार्गी था जिसने विदेह के राजा जनक के विशाल यज्ञ में याज्ञवल्क्य को अपने शास्तार्थ से परेशान कर दिया | 2 जैन तथा बौद्ध काल में स्त्रियों की स्थिति काफी हद तक अच्छी रही, स्त्रियों को संघों में शामिल किया गया | प्राचीन भारतीय इतिहास में स्त्रियों ने एक लडकी के रूप में एक बहु के रूप में एक माँ के रूप में नारी शक्ति के रूप का परिचय दिया है |

मुख्य शब्द :- स्त्री , दुहित्ति , मनुस्मृति , नियोग प्रथा ,द्रौपदी , आम्रपाली , कौटिल्य , सती प्रथा |

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में स्त्रियों को दैवीय स्वरुप माना गया है | स्त्री को जनानी तथा अर्धांगिनी नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है | मनुस्मृति में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जहां स्त्री की पुजा होती है वही परमात्मा वसते है और जहां स्त्री की पुजा नहीं होती वहा सभी कार्य विफल होते है |3 ऋग्वैदिक काल में संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रचलन था | परिवार में पुरुष का स्थान सबसे उच्च था , उसके बाद पुरुष की पत्नी का स्थान था | स्त्री परिवार को संजोय रखने तथा घर के अंदर और खेती का कार्य भी करती थी | उतर वैदिक समय में स्त्रियाँ युद्ध , सभाओं , रथों की दौड़ में भाग लेती थी जहा से यह प्रतीत होता है कि स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार दिए जाते थे | उतर वैदिक काल में एक और स्त्री को सम्मान मिला तो दूसरी और समाज में मासिक धर्म के रक्त को गंदा समझा गया | समाज ने एक अपवित्र धारणा बना ली कि मासिक धर्म की स्थिति में स्त्रिया किसी भी यज्ञ में शामिल नहीं हो सकती |बौद्ध तथा जैन धर्म स्त्रियों को समान नजरों से देखता है वही दूसरी और बौद्ध तथा जैन संघो में स्त्री तथा पुरुष को एक दुसरे से शारीरिक दुरी बनाए रखने की चेतावनी देता है | ऋग्वैदिक काल से लेकर गुप्त काल की स्त्रियों ने अपने जीवन को घर की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने वर्तमान काल की स्त्रियों की तरह शिक्षा को भी अपने जीवन का अभिन्न अंग माना | प्राचीन भारत में ऋग्वैदिक काल से स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी वही आगे चलकर स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आना शुरू हो गए जैसे कि शतपथ ब्राह्मण के अनुसार " एक निर्मल तथा पवित्र स्त्री वह है जो अपने पति को सभी सुख सुविधाए उपलब्ध करवाती है और लडकों को जन्म देती है और कभी किसी का अनादर नहीं करती है |

उदेश्य :-

1. प्राचीन भारत में स्त्रियों की शिक्षा का क्या स्रोत था क्या वह अध्ययन करती थी अध्ययन करती थी तो क्या गुरु कुल में जा कर शिक्षा ग्रहण करती थी |
2. प्राचीन काल में स्त्रियों की समाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र की भागीदारी के विषय में अध्ययन करना |

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

3 . प्राचीन भारत में स्त्रियों के मासिक धर्म के विषय में समाज की क्या सोच थी |

4 . प्राचीन भारत में सती प्रथा , शिशु हत्या , पर्दा प्रथा के विषय में अध्ययन करना |

साहित्य समीक्षा : -

1 . प्रो प्रोसुन धार **" चैलेंजेज ऑफ़ वीमेन एम्पावरमेंट इन इंडिया फ्रॉम एन्शियन्ट मॉडर्न टाइम "** यह शोध पत्र 2017 में प्रकाशित हुआ है जिसमे इन्होने प्राचीन , मध्यकालीन तथा आधुनिक काल की स्त्रियों की दशा के बारे में लिखा है | प्राचीन काल में सती के बारे में विस्तार से वर्णन किया है |

2 . प्रदीप एम . डी **" लाइफ ऑफ़ वीमेन इन इंडिया एन्शियन्ट टू मॉडर्न टाइम "** यह शोध पत्र 2018 में प्रकाशित हुआ जिसमे एम . डी महोदय लिखते है कि स्त्री परमात्मा द्वारा इस सृष्टि में भेजी गए सबसे बहुमूल्य देन है | प्राचीन काल में स्त्रियों के साथ भेद भाव नहीं किया जाता था परन्तु 19 शताव्दी आते आते स्त्रियों कि स्थिति दयनीय हो गई |

3 . सप्तर्षि सेनगुप्ता **" रेविन्डिंग द एन्शियन्ट पास्ट: सोशल कंडीशन डयुरिंग मौर्यन एम्पायर "** लिखते हैं कि मौर्य काल में स्त्रियों की स्थिति ऋग्वेदिक तथा उतर वैदिक काल से अलग थी | मौर्य काल में स्त्रियों ने शासकों की अंग रक्षिकाओ के रूप में कार्य किया तथा समाजिक और आर्थिक क्षेत्र में बढ़ चढ़कर भाग लिया |

4 . श्रीराम शर्मा **" गुप्त एवं हर्षकाल में महिलओं की दशा : चीनी यात्रा वृतांतों के विशेष विवरण के आधार पर एक विश्लेषण "**शोध पत्र में वर्णन करते है की गुप्त काल में स्त्रियों कि स्थिति में गिरावट आई तथा स्त्रियों को भोग विलास की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा |

ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति :-

इतिहासकारों द्वारा 1500-1000 ई०पू० तक के काल को ऋग्वैदिक काल माना गया है क्योंकि इस समय बहुत से ऋषियों द्वारा ऋग्वेद ग्रन्थ की रचना की गए | ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं जिसमें उस समय के समाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है | ऋवैदिक काल के अध्ययन से पता चला है कि उस समय स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी | इस काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने की खुली छुट थी उन्हें किसी भी प्रकार के समाजिक बंधन से मुक्त रखा गया | ऋग्वेद के बहुत से मंत्रो की रचना विशववारा , लोपामुद्रा, सिक्ता , घोषा आदि पंडिता स्त्रियों द्वारा की गई है |4 स्त्रियों को जहा ऋवैदिक काल में उच्च सम्मान मिला वही दुसरी तरफ उन्हें बहुत से अधिकारों से वंचित भी रखा गया | ऋग्वैदिक समाज में स्त्री को सम्पति का अधिकार नहीं मिला | पिता की मृत्यु के बाद घर के जेष्ठ पुत्र को सम्पति का मालिक माना गया | ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को विवाह करने का अधिकार दिया गया था उन्हें विवाह करने के लिए अपना वर स्वयं चुनने का अधिकार दिया गया था | ऋग्वेद ग्रंथ में स्त्रियों के प्रेम विवाह का प्रसंग भी देखने को मिलता है | ऋग्वैदिक समाज में स्त्री और पुरुष की विवाह की आयु क्रमशः16 – 17 वर्ष उल्लेखित की गई है |5 स्त्री तथा पुरुष दोनों यज्ञों में भाग लेते थे | यज्ञों में भाग लेने वाले पुरुष तथा स्त्री को एक खेत में दो जुड़े हुए बैलों के समान बताया गया है |6 ऋवैदिक काल में सती प्रथा का साक्ष्य हमें नहीं मिलता है | उस समय समाज में नियोग प्रथा और विधवा विवाह का वर्णन मिलता है |

उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति : -

उतरवैदिक काल उस समय को कहते है जिस समय सामवेद , यजुर्वेद , अथर्ववेद , उपनिषदों , ब्राह्मणों तथा आरणयकों की रचना हुई | इस काल में स्त्रियों की दशा में बदलाव देखा गया जिस प्रकार उन्हें ऋग्वैदिक काल में पुरूषों के समान बराबर का मिला परन्तु उतरवैदिक काल में उन्हें बहुत से अधिकारों से वंचित रखा गया | स्त्रियों को वेदों के अध्ययन और यज्ञों के अनुष्ठानों से वंचित रखा | उतरवैदिक काल में आर्यों का विस्तार बहुत बढ़े स्तर पर आरम्भ हुआ तथा 16 प्रमुख जनपदो का उदय हुआ | इस काल में स्त्रियों ने पशुओं को चराना, गाय का दुध निकलना , आटा पिसना , कपडों की रंगाई आदि करने का कार्य करना आरम्भ किया | स्त्रियाँ नाच गान , संगीत , चित्रकला आदि मनोरंजन युक्त कलाओं की शिक्षा भी ग्रहण करती थी | रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्य में एक तरह माता सीता जी को अग्नि जैसा पवित्र दर्शाया गया वहीं उसकी दुसरी और महाभारत महाकाव्य में कौरवों द्वारा पांडवों की पत्नी द्रौपदी का चीर हरण किया गया | इन दोनों महाकाव्यों में स्त्रियों के स्वयंवर का उल्लेख मिलता है जैसे सीता स्वयंवर और द्रौपदी स्वयंवर | उतर वैदिक काल में स्त्रियों के मासिक धर्म को अपवित्र माना जाता था जो की आज के वर्तमान समाज में भी देखा जा सकता है | वैदिक साहित्य में मासिक धर्म का उल्लेख मिलता है तथा माना जाता है इंद्र ने एक बार विश्वरूप की हत्या कर दी तथा उसके मरने पर जो खून निकला उसका एक भाग स्त्री को दे दिया जो मासिक धर्म के रूप में स्त्री को झेलना पड़ा |7 उतर वैदिक काल में एकल विवाह तथा बहुपति विवह का वर्णन मिलता है जब द्रौपदी ने पांच पांडवों के साथ विवाह किया यह घटना बहुपति की और इशारा करती है | इस काल में वैश्यावृति समाज में उपस्थित थी , समाज वैश्याओं को सम्मान की नजरों से देखता था | उतरवैदिक काल के किसी भी साहित्य से पर्दा प्रथा का साक्ष्य नहीं मिलता | अथर्ववेद में सती प्रथा के

विषय में एक वाक्य मिलता है जिसमे लिखा है कि पति की मृत्यु के बाद स्त्री श्मशान घाट पर जाकर पति के साथ चिता पर लेट जाती है और सती होने का मन बना लेती है परन्तु उसके सगे सबंधी स्त्री को चिता से नीचे उतार लेते है |

जैन काल में स्त्रियों की स्थिति : -

जैन धर्म ऋग्वैदिक काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप में अस्तित्व में रहा है | महावीर जैन के समय यह धर्म विख्यात हुआ | जैन काल के समय स्त्रियों ने घरों से निकलकर समाजिक आर्थिक तथा राजनितिक क्षेत्र में अपनी भागीदारी समाज के समक्ष रखी | जैन धर्म के प्रभाव के कारण बहुत सी स्त्रियों ने जैन धर्म को अपना लिया | चम्पा के शासक दधिवाहन महावीर स्वामी के भक्त थे , उनकी पुत्री चन्दना को महावीर ने जैन धर्म में दीक्षित किया तथा यह प्रथम स्त्री जो महावीर जैन की पहली भिक्षुणी बनी |8 जैन धर्म ग्रंथो द्वारा स्त्री को ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए स्त्री को खतरे के रूप में देखा गया | पहले पहल जैन धर्म स्त्रियों को अपने जैन संघों में शामिल नहीं करना चाहता था परन्तु महावीर जैन ने स्त्रियों को जैन संघ में शामिल किया | जैन काल में पुरुष और स्त्री दोनों जो जैन संघ में शामिल थे उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना था जिसकी वजह से ही जैन संघों द्वारा स्त्रियों पर कठोर प्रतिबंध लगाए थे | जैन काल में स्त्रियाँ दिगम्बर सम्प्रदाए को अपनाने में संकोच करती रही क्योंकि इस सम्प्रदाए के लोग वस्त्र धारण नहीं करते थे जिस कारण से स्त्रियों ने कामवासना और लाज लज्जया से बचने के लिए इस धर्म से अपनी दुरी बनाए रखी | जैन धर्म ने स्त्रियों को सम्मान दिया तथा उन्नीसवीं तीर्थंकर मल्लीनाथ भी एक स्त्री थी जिसने जैन धर्म में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित किया |

बौद्ध काल में स्त्रियों की स्थिति : -

बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा बुद्ध द्वारा की गए | यह धर्म अहिंसा को मानता था तथा वैदिक साहित्य का विरोध करता था | बौद्ध काल में स्त्रियों की स्थिति काफी अच्छी थी उन्हें वे सभी कार्य करने की छुट थी जो पुरुष कर सकते थे | इस समय समाज में वैश्यावृति का बहुत काफी प्रचलन था और समाज वैश्याओं को अच्छी दृष्टी से देखता था | महात्मा बुद्ध ने आनंद के कहने पर स्त्रियों को बौद्ध संघ में शामिल किया परन्तु बुद्ध ने यह भी कहा कि स्त्रियों के बौद्ध संघ में शामिल करने से यह संघ जल्दी ही अपने पतन की और अग्रसर होगा | उन्होंने स्त्रियों को संघ में शामिल तो कर लिया परन्तु स्त्रियों पर संघों में अपने कठोर नियम भी लगाय जिस कारण स्त्रियाँ बौद्ध संघों में भी स्वतंत्र नहीं रह सकी | बौद्ध काल में एक ऐसी वैश्या जिसका नाम आम्रपाली था , उसने बौद्ध संघ को बहुत से दान दिए तथा बौद्ध धर्म में शामिल हुए | बौद्ध काल में राजकीय स्त्रियों ने भी अपने आप को स्वतंत्र घोषित किया तथा बौद्ध संघों में सम्मलित हुए ऐसी ही कुछ राजकीय स्त्रियाँ ये थी :-महाप्रजापति गौतमी , यशोधरा , नंदा तथा खेमा आदि |

मौर्य काल में स्त्रियों की स्थिति : -

मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का सर्वप्रथम महानतम साम्राज्य था जिसकी सीमाए पुरे भारतीय उपमहाद्वीप तक फ़ैली हुए थी | मौर्य काल में जहां राजनितिक स्थिति अच्छी थी उसी प्रकार यहा स्त्रियों की स्थिति भी अच्छी थी | मौर्य काल में स्त्रियाँ शासकों के अंगरक्षकों के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करती थी उन्हें इस कार्य के बदले राज्य से वेतन मिलता था | कौटिल्य अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में लिखते हैं कि इस समय स्त्रियाँ गुप्तचरों का कार्य करती था | मौर्य काल में स्त्री को अपने पास सम्पति और रुपए पैसे रखने का अधिकार था , अर्थशास्त्र स्त्री को 2000 पण रखने की अनुमति देता है |9 स्त्रियों को स्वतंत्र रूप से विवाह करने की अनुमति थी | अगर किसी पति पत्नी को विवाह के बाद तलाक लेना होता था तो वह तलाक ले सकते थे | समाज में विधवापुनर्विवाह प्रचलित था , विधवा स्त्री के सम्मान को ठेस नहीं पहुंचाई जाती थी | कौटिल्य लिखते है कि समाज दास प्रथा प्रचलित थी , स्त्रियों को भीं दास बनाया जाता था | दास स्त्री के गर्भवती होने पर मालिक को स्त्री के साथ सही व्यवहार करना होता था ,शिकायत मिलने पर मालिक को दंडित किया जाता | वैश्यावृति मौर्य काल में प्रचलित थी | राज्य की और से वैश्याओं की सुरक्षा की जाता थी जिसके बदले राज्य इनसे कर भी लेता था | वैश्याओं को रुपजीवा कहा जाता था , वैश्याओं को समाज में विवाह करने की आज्ञा भी थी और बहुत सी वैश्याओं ने वैश्यावृति को छोड़ कर विवाह सम्बन्ध स्थापित किए | मौर्य साम्राज्य के अभिलेखीय और साहित्य साक्ष्यों का अध्ययन करने पर कहीं भी सती प्रथा का जिक्र नहीं मिलता परन्तु यूनानी लेखक उतरपश्चिम प्रान्तों सती प्रथा का उल्लेख करते हैं |10 पर्दा प्रथा का उल्ल्लेख मौर्य काल में नहीं मिलता है |

गुप्त काल में स्त्रियों की स्थिति : -

गुप्त काल को प्राचीन भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से संबोधित किया जाता है | गुप्त काल के बहुत से अभिलेखीय और साहित्यक साक्ष्य हैं जो शासक वर्ग की जीवन गाथा के विषय से हटकर ग्रामीण लोगों की जीवन गाथा के बारे में वर्णन करते हैं | गुप्त काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई तथा उन्हें उपभोग की वस्तु के समान समझा जाने लगा | गुप्त काल में स्त्रियों को शुद्रों की तरह रामायण , महाभारत , पुराण सुनने और पढ़ने का अधिकार नहीं था | दुसरी ओर उच्च वर्गीय तथा शासक्रिय स्त्रियों ने राजनीति में अपना योगदान दिया | चंद्रगुप्त -2 की पुत्री प्रभावती ने वाकाटक शासक के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया तथा राजनीति में अपनी स्थिति मजबुत की |11 दास प्रथा गुप्तकालीन समाज में पूरी तरह से हावी थी | स्त्रियों को भी दास बनाया गया , कुछ ऐसी भी स्त्रियाँ थी जो भुख से लाचार होकर दासियाँ बन गई | यह काम उन्हें मजबूरी में करना पड़ा |12 वैश्याओं की बात करे तो

यहाँ के समाज में वैश्याओं की स्थिति अच्छी थी | गुप्त काल में सर्वप्रथम सती प्रथा का अभिलेखीय साक्ष्य 510 ई० में भानुगुप्त के एरणअभिलेख से मिलता है | इस युग में बाल विवाह पर अधिक जोर दिया गया | देवदासी प्रथा जो मौर्य काल से प्रचलन में थी, इस युग में भी लोगों में यह प्रचलन में रही | गुप्त काल के प्रसिद्ध कवि कालिदास के मेघदूत से पता चलता है कि महाकाल मन्दिर में देवदासियों को रखा जाता था, लोग मन्दिरों को दान देने में विश्वास रखते थे जिस कारण से ये लोग अपनी पुत्रियों को भी मन्दिर को दान कर देते थे |13 नारद स्मृति के अनुसार गुप्त काल में स्त्रियों को सम्पति के अधिकार से वंचित रखा गया | गुप्त काल में समाजिक स्तर बहुत नीचे गिर चुका था जो स्त्रियाँ केवल पुत्रियों को जन्म देती थी समाज में उनको हींन दृष्टी से देखा गया, समाज तथा घर परिवार के लोग उन्हें कई तरह के ताने मार कर लज्जित करते थे |14 फाह्यान, हुंसाग जैसे चीनी यात्री गुप्त काल में भारत आए तथा इन्होंने पुर्ण रूप से गुप्त कालीन समाज में पर्दा प्रथा को नकार दिया |

निष्कर्ष : -

ऋग्वैदिक काल से लेकर गुप्त काल तक के उल्लेखित विवरण से यह पता चलता है कि प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति बहुत से उतार चढ़ाव देखे गए | ऋग्वैदिक काल में जहा एक तरफ स्त्रियाँ वैदिक साहित्य को लिखती पढ़ती वही गुप्त काल में उनको वैदिक साहित्य को पढ़ने की ही नहीं बल्कि सुनने तक की अनुमति नहीं थी | प्राचीन भारत स्त्री की देवीय स्वरुप में पुजा की गए परन्तु असल जिन्दगी तथा समाज ने स्त्री को शापित ही समझा गया | कई जगहों पर स्त्री को अपने चरित्र का परिचय देना पड़ा | इस समय स्त्री की तुलना एक जहरीले सर्प से की जाने लगी और विधवा होने पर स्त्री पर यह आरोप लगाया गया की इसने अपने पति को खा लिया | उच्च वर्गीय स्त्रियों का जीवन प्राचीन भारतीय समाज में अच्छा रहा , वे अपने पति के समान कंधे से कंधा मिला कर चलती रही परन्तु जैसे जैसे कालचक्र में परिवर्तन हुआ प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति काफी दयनीय हो गई |

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. डी. एन. झा , प्राचीन भारत एक रूपरेखा , मनोहर पब्लिशर्स एंड डिसिट्रब्यूटसर्स, ISBN 81-7304-216-0, प्रकाशन -2016, पृष्ठ न०
2. उपिन्दर सिंह , प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास , ISBN 978-81-317-7474-8 प्रथम मुद्रण 2017, पृष्ठ न०191.
3. मनुस्मृति 3.56
4. के.सी. श्रीवास्तव , प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति , प्रथम मुद्रण 1991, पृष्ठ न०88
5. रामशरण शर्मा , प्रारंभिक भारत का परिचय , ISBN 978-250-2651-8, प्रथम मुद्रण 2004, पृष्ठ न० 115
6. डॉ० जयशंकर मिश्र , प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास , ISBN 978-93-83021-29-1 , पृष्ठ न०363
7. तैतिरीय संहिता 2.5.1
8. डॉ० जयशंकर मिश्र , प्राचीन भारत का समाजिक इतिहास , पृष्ठ न० 703.
9. ए. एल. बाशम , अद्भुत भारत ISBN 978-81-930093-4-5 , पृष्ठ न०126.
10. आर्य कॉम्पिटिशन टाइम्स भारतीय इतिहास , संकलन एवं सम्पादन -डॉ० प्रेम प्रकाश ओला , निर्मल कुमार आर्य तथा बी.एल. बजिया , पृष्ठ न०119.
11. डॉ०अल्तेकर , पोजीशन ऑफ़ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइज़ेशन , पृष्ठ न० 187.
12. डॉ० अन्विता , गुप्त काल में नारियों की स्थिति , पृष्ठ न० 46.
13. आर्य कॉम्पिटिशन टाइम्स भारतीय इतिहास , संकलन एवं सम्पादन -डॉ० प्रेम प्रकाश ओला, निर्मल कुमार आर्य तथा बी.एल . बजिया , पृष्ठ न०161.
14. याज्ञवल्क्य स्मृति 1/73.

Cite this Article

राहुल कुमार, "प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेष्ण :- ऋग्वैदिक काल से गुप्त काल तक ", Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal (SHISRRJ), ISSN : 2581-6306, Volume 5 Issue 2, pp. 01-04, March-April 2022. URL : http://shisrrj.com/SHISRRJ22124